Living the LOTUS
Buddhism in Everyday Life
6
2019
VOL. 165

Founder's Essay

आँखें जो दूसरों में अच्छाई देखती हैं

हालाँकि, प्रशंसा पाने से बढ़कर खुशी किसी में नहीं है, लेकिन लोग दूसरों की प्रशंसा करना पसंद नहीं करते हैं।

मैं अक्सर पूछता हूँ, "मैं आपके जैसा कैसे बन सकता हूँ और लोगों की अच्छाइयों को, उनके दोषों पर ध्यान किए बिना, देख सकता हूँ?" मुझे संदेह है कि लोग केवल अन्य की कमियों को देखते हैं क्योंकि उनमें दूसरों से आगे निकलने की प्रतिस्पर्धा की तीव्रता कूटकूट कर भरी है। लोग अपनी रक्षा करने की पूरी कोशिश करते हैं -जिसमें अपनी कमजोरियों को नहीं दिखाने की कोशिश करना भी शामिल है-और अधिकतर वे स्वयं को खोने से बचाने की कोशिश करते हैं।

मैं उस तरह "जीतने" का प्रयास नहीं करता हूँ। इसके बजाय, मुझे अपनी टोपी उनके सामने उतार लेने की जल्दबाजी है, जो मुझ से दूर आगे है और मैं उनसे कुछ सिखाने का आग्रह करता हूँ। चूँकि हम सभी साथी बुद्ध के बच्चे हैं, एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करने का क्या औचित्य है? ऐसी सोच के साथ, हम मुक्ति की चिंता से मुक्त हो जाते हैं, जो हमें एक सीधी स्थिति में ला खड़ा करता है। यह स्वाभाविक रूप से उदारता को बढ़ाता है जो हमें अन्य लोगों में अच्छाई देखने का प्रोत्साहन देता है। हमारे पास करुणा की आँखें हैं।

यदि पति और पत्नी इस उदारता को बनाए रख सकते हैं, तो उनका दैनिक जीवन नाटकीय रूप से बदल जाएगा। मेरा विश्वास है कि इसमें गंभीर प्रशंसा पाने का रहस्य निहित है।

निक्क्यो निवानो, काइसो ज़ुइकान 9
(कोसेइ प्रकाशन, 1997), पीपी। 250 - 251

Living the Lotus
Vol. 165 (June 2019)

Senior Editor: Koichi Saito
Editor: Kensuke Suzuki
Copy Editor: Parmita Shekhar

Living the Lotus is published monthly by Rissho Kosei-kai International, Fumon Media Center, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo 166-8537, Japan.
TEL: +81-3-5341-1124
FAX: +81-3-5341-1224
Email: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

रिश्शो कोसेईकाई गृहस्थों की संस्था है जिसका पवित्र ग्रन्थ सद्धर्म पुण्डरीक सूत्र एवं अन्य दो लघु सूत्रों का संकलन है। इस संस्था को संस्थापक निक्क्यो निवानो एवं सह-संस्थापक म्योको नागानुमा ने सन् १९३८ ई० में स्थापित किया था। यह उन साधारण स्त्रियों एवं पुरुषों की संस्था है जिन्हें बुद्ध में श्रद्धाविश्वास है तथा जो बुद्ध के उपदेशों के अनुसार चलते हुए अपने आध्यत्मिक जीवन को समृद्ध बनाते हैं।

प्रेसिडेण्ट का दिशानिर्देश निचिको निवानो, के अन्तर्गत हम देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर अन्य सस्थाओं के साथ मिलकर शान्ति एव कल्याण के लिये तत्पर होकर परोपकार के कार्य में सलग्न हैं।

Living the Lotus-Buddhism in Everyday Life (ioaO¾u mqKavÍl iq;%h ;=, Ôj;afjuq - tosfkÞ osúhg nqÿ oyu noaO lr .ksuq') hk f;audj ;=," tosfkÞ ðù;hg ioaO¾u mqKavÍl iq;%fha lshdoSï noaO lr f.k ufvys msfmkakdjq ,iaik fk¨ï u,la fia ;u ðú;h iuDêu;a lrf.k" tf,iu jeä jákdlñka hq;= ;;ajhg m;a úh hq;=h hk m%d¾:kh .eí ù we;' fuu iÕrdj uÕska f,dalh mqrd jHdma; ù isákakdjq idudðl idudðldjka tosfkÞ osúhg nqÿoyu noaO lrf.k lghq;= lrkakdjq whqre wka;¾cd, ud¾.fhka fnÞyeßu isÿ lrkq ,efí'

बुद्ध की शिक्षाओं का अध्ययन

श्रद्धेय निचिको निवानो
प्रेसिडेण्ट रिश्शो कोसेइ काइ

धर्म का अध्ययन दैनिक जीवन का अंग है

पुण्डरीक सूत्र के परिवर्त 2, "उपायकौशल्य" का हम क्रमिक "अध्ययन" देखते हैं:

> "सभी बुद्धों का धर्म ऐसा है:
> सहस्रों लक्ष्यों उपायकौशल्य के माध्यम के सहारे
> वे धर्म का यथोचित ढ़ंग से उपदेश करते हैं
> बिना पर्याप्त अध्ययन अभ्यास के,
> इसे पूर्ण रूप से समझना दुर्लभ है।"

बुद्ध सुननेवालों के अनुसार अनेक युक्तियुक्त उपायों से धर्मदेशना की विवेचना करते हैं, लेकिन पर्याप्त अध्ययन के बिना वे इसे नहीं समझ सकते हैं। इसके विपरीत, अध्ययन के माध्यम से, हमें स्वयं इसे समझने में सक्षम होना चाहिए, उस समय जो भी आवश्यक है।

संयोग से, वर्ष के इस समय में जापानी स्नोबेल ट्री (स्टैरेक्स जैपनीकस), जिसकी शाखाएँ सफेद फूलों से भरी हैं, और जो इस कविता का विषय है: "आवाजों के साथ झुमता हुआ एक पेड़: स्नोबेल पूर्ण रूप से खिल चुका है।" जब लोग स्नोबेल को पूर्ण खिला देखते है, उन्हें यह सुंदर लगता है। पेड़ का निकलते "आवाज के साथ झुमना", देखने के भाव को कितनी तरोताजा करता है? तब यह सोचकर कि ये "आवाजें" हमें क्या बता रही हैं, मुझे लगता है कि वे हमें बहुत सी बातें सिखा सकते हैं।

बुद्ध समय और परिस्थितियों के अनुसार हम में से प्रत्येक को धर्मोपदेश करते हैं, जैसेकि स्नोबेल समय से पूर्ण खिलना और आवाज का उत्पन्न होना, लोगों को अनित्यता के सिद्धांत का बोध कराता है, (जो बताता है कि सभी वस्तुएँ निरन्तर जन्म और मरण के चक्र में बदलती जाती हैं), लेकिन जो दूसरे लोगों को वर्तमान में जीवन को पूरी तरह जीने की शिक्षा दे जाते हैं।

जब हम प्रकृति में तथा आस-पास होने वाली सभी तरह की घटनाओं में सत्यता के कार्य का अनुभव करते हैं और उनमें बुद्ध की आवाज को सुनने की कोशिश करते हैं, तो हम अपने अभिमान या मन की गणना करने में सक्षम होने पर विचार करते हैं, तब ईमानदारी से जीने का साहस मिलता है और एक नया कदम आगे बढ़ता है। इस प्रक्रिया की पुनरावृत्ति "अध्ययन" है।

आस्था का पालन अपने में "अध्ययन" है

हर दिन हमारे आस-पास होने वाली चीजें धर्म के अलावा और कुछ नहीं हैं, जिसका बुद्ध ने हमें "सहस्र लक्ष्यकोटि उपायकौशल्य" के माध्यम से उपदेश किया है। जो कोई भी इस तथ्य को स्वीकार करने का प्रयास करता है, वह इसे अनुभव कर सकता है।

हालाँकि, केवल कुछ ऐसा होने के बजाय जिसके द्वारा आप ज्ञान प्राप्त करते हैं, अध्ययन अभ्यास को बारबार दोहराने के माध्यम से होता है, कुछ जो आपको अपने स्वयं के जीवन को बनाने में मदद करता है वह बुद्ध की देशना से मिलता है। उदाहरण के लिए, मान लो कि आप किसी ऐसे करीबी व्यक्ति के साथ हैं, जिससे आपका नहीं बनता है। इससे पहले कि आप उस व्यक्ति को दोषी ठहराएँ, यदि आपको लगता है कि वह आपको सिखा रहा है कि आप पर्याप्त विचार नहीं कर रहे हैं, तो आप ईमानदारी से माफी मांग सकते हैं। इसी तरह, जब एक कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ता है, तो आप स्वयं से पूछें, यह स्थिति अभी मुझे क्या सिखा रही है? यह एक सकारात्मक दृष्टिकोण का अभ्यास करना है और इसे आपको जीवन का हिस्सा बनाना है।

फिर भी, हम यह नहीं कह सकते हैं कि हमारा मन हर समय शांति में है या बुद्ध की देशना के रूप में जो कुछ भी आती है उसे स्वीकार करने में सक्षम हैं। कभी-कभी हमारे मन में एक बात आती है, लेकिन दूसरी बार हम संदेह और अनिश्चितता से परेशान होते हैं।

रिश्शो कोसेइ काइ के सदस्य के रूप में, जो बुद्ध की देशना की ओर हमारे सशंकित मन में परिवर्तन लाता है, वे है "सूत्र का पाठ करना" और "दूसरों को धर्म में मार्गदर्शन करना, मार्ग में साथी सदस्यों की सहायता करना, और होजा सत्र में भाग लेना।" "धर्म का अध्ययन और अभ्यास" करने के साथ, अन्य दो को विश्वास के तीन मूलभूत आधार कहे जाते हैं। सूत्र का पाठ करना और होजा सत्र में भाग लेना, अध्ययन के क्षेत्र में आते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि विश्वास में दृढ़ निमग्न जीवन एक ही शब्द अध्ययन से अभिव्यक्त होता है।

अब हम धर्म का अध्ययन क्यों करते हैं, इसकी ओर मुड़ते हैं तो उत्तर सूत्रों की उन पंक्तियों में मिलता है, जो ऊपर उद्धृत है:

> मेरे सभी कार्य बोधिसत्वों को उपदेश द्वारा परिवर्तित किया
> एकयान के माध्यम से
> अब मेरे कोई भी शिष्य श्रावक नहीं है।

जैसाकि यह उद्धरण हमें बताता है, बोधिसत्त्व का स्वभाव हम सभी में निहित है। दूसरे शब्दों में, किसी को यह नहीं सोचना चाहिए कि चीजें ठीक हैं क्योंकि वह खुश है। इस अर्थ में, हमारे अध्ययन का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू धर्म को अन्य लोगों के साथ साझा करना है, क्योंकि हम चाहते हैं कि अन्य भी खुश रहें, जो अपने साथ दूसरों को एकजुट होने का महान आनंद और सुख शान्ति लाते हैं।

From *Kosei*, June 2019

समेकित त्रिविध पुण्डरीक सूत्रः
प्रत्येक अध्याय का सारांश एवं मुख्य बिन्दुयें

सद्धर्मपुण्डरीक सूत्र
अध्याय 8: पाँच सौ श्रावकों को बुद्धत्व प्राप्ति का आश्वासन

इस अध्याय का विषय पूर्ण और कई अन्य निकट के शिष्यों को दिया गया आश्वासन है कि वे निश्चित रूप से बुद्धत्व प्राप्त करेंगे। बुद्ध ने पूर्ण को आश्वस्त किया कि वह बुद्ध बनेगा और उसका नाम होगा- धर्मप्रभास तथागत। उन्होंने अपने अन्य शिष्यों को भी आश्वस्त किया कि वे समन्तप्रभास तथागत कहलाएँगे।

इसके सिवाय, बुद्ध ने कहा कि "ऐसा ही अन्य सभी श्रावकों के साथ भी होगा," इसका अर्थ है कि कोई भी जो धर्मोपदेश को सुनता है और बोधिज्ञान के लिए सच्चा प्रयास करता है, अंततः वह इसे प्राप्त कर लेगा और समन्तप्रभास तथागत बन जाएगा।

बुद्ध ने महाकश्यप को यह संदेश देने का भी निर्देश दिया कि जो लोग महासमागम में उपस्थित नहीं हैं, वे पाँच सौ श्रावक जो स्वयं उठकर महासमागम से बाहर चले गये थे, अध्याय-2 में "पाँच हजार श्रावकों के बाहर चले जाने" के प्रकरण के दौरान। इसका एक और अर्थ है, जैसे ही कोई बुद्ध के उपदेश को सुनता है, एक बंधन बनता है। भले ही वह व्यक्ति दूर हो जा सकता है, बंधन कभी नहीं टूटता है -कुछ समय बाद, उस व्यक्ति को याद आयेगा और बुद्ध के मार्ग पर लौट आएगा, और अंततः बोधिज्ञान प्राप्त करेगा। इसी प्रकार, यदि हम, बुद्ध के आधुनिक-काल के शिष्य, पुण्डरीक सूत्र से सबक सीखते हैं और उसका अभ्यास करते हैं, तो हम भी निश्चित रूप से समन्तप्रभास तथागत बन जाएंगे।

सभी सार्वभौमिक रोशनी तथागत बनेंगे

जैसा कि नाम से स्पष्ट है, समन्तप्रभास तथागत एक उपस्थिति है जो संसार में सर्वत्र प्रकाश फैलाती है। उसी अध्याय में, बुद्ध ने घोषणा की है कि ये सभी तथागत अगले एक को आश्वासन देते हैं, जिसका अर्थ है कि एक तथागत किसी अन्य व्यक्ति को आश्वासन देते हैं और वह व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति को आश्वासन देता है, यह एक सिलसिला है। हममें से प्रत्येक जो बुद्ध की धर्मदेशना को सीख रहा है और उसका अभ्यास कर रहा है, उसे किसी समय एक समन्तप्रभास तथागत बन जाने का आश्वासन प्राप्त होगा। हमारा यह भी कर्तव्य है कि हम यह आश्वासन दूसरे को दें। इस प्रकार, धीरे-धीरे, समन्तप्रभास तथागत का गुणात्मक विकास होगा और हमारा संसार प्रकाश से भरी शुद्ध भूमि बन जाएगी।

यह वह अर्थ है जिसे हम उस शानदार आश्वासन से पढ़ सकते हैं जो इस अध्याय का विषय है।

वस्त्र में छिपे मणि का दृष्टान्त

बुद्ध से सीधे आश्वासन प्राप्त करने वाले शिष्य अत्यंत प्रमुदित हुए, और उन्होंने उनके सामने खड़े होकर आभार प्रकट किया। तदुपरान्त, अज्ञातकौंडिन्य ने शिष्यों की भूलों को स्वीकार करते हुए कहा कि वे केवल अपने क्लेशों को निर्मूल करके प्राप्त किए अल्प ज्ञान के साथ संतुष्ट थे और उनका मानना था कि उन्हें सम्यक् ज्ञान प्राप्त है। यह दृष्टांत उनके भूलों की याद कराता है:

कोई गरीब आदमी एक घनिष्ठ मित्र से मिलने गया। उस मित्र ने उसे उत्तम भोजन तथा मदिरा के साथ मनोरंजन किया। वह काफी नशे में हो गया और गाढ़ी निद्रा में सो गया। इस बीच, उसके मित्र को अचानक किसी काम से बाहर जाना पड़ा। वह नींद में खलल

नहीं डालना चाहता था, इसलिए उसने उपहार के रूप में मित्र के वस्त्र के अस्तर में एक अमूल्य मणि छिपा दिया, क्योंकि वह जानता था कि हाल के वर्षों में उसका दोस्त गरीबी में डूब गया है। वहाँ नशे में पड़ा हुआ, वह मित्र इस बात से पूरी तरह अनजान रहा।

नींद टूटने के बाद, उस गरीब ने देखा कि उसका घनिष्ठ बाहर निकल गया है, इसलिए वह भी निकल गया और अपने बेहाल जीवन में लौट आया। अंततः वह इधर उधर भटकता हुआ एक दूसरे देश में पहुँच गया। उसे अपने लिए भोजन और कपड़ों की जुगाड़ में अनेक कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती थी। लेकिन वह जीवन चलाने के लिए जो उपार्जित कर लेता था उससे वह संतुष्ट था।

बहुत समय बीत जाने के बाद, वह आदमी अपने पुराने मित्र से रास्ते में आ भिड़ा। मित्र उसकी जर्जर हालत से हैरान था और कहा, "यह कैसे है कि तुम अभी भी भोजन और वस्त्र के लिए संघर्ष कर रहे हो? तुम कितने मूर्ख हो? मैं चाहता था कि तुम एक शांतिपूर्ण और सुखकर जीवन व्यतीत कर सको, इसलिए उस दिन मैंने एक अनमोल रत्न तुम्हारे वस्त्र के अस्तर में सिल दिया था। फिर वह उसके पास जाकर उसके गंदे कॉलर के अस्तर से रत्न निकालकर कहा: अब जाओ और इस रत्न को बेच दो ताकि तुम्हें जो चाहिए वह खरीद सको: तुम गरीबी एवं साधनहीनता से पूरी तरह से मुक्त हो, इच्छानुसार जीवन यापन करो।"

इस दृष्टांत को समाप्त कर, अज्ञातकौंडिन्य और अन्य शिष्यों ने बुद्ध के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए कहा: बुद्ध उस मनुष्य के घनिष्ठ मित्र की तरह हैं। जब बुद्ध अभी भी एक बोधिसत्व थे, उन्होंने हम सभी को सिखाया है कि क्योंकि हम सभी के पास यह अमूल्य रत्न/ बुद्ध स्वभाव है, हम सभी अभ्यास के माध्यम से बोधिज्ञान प्राप्त करने में सक्षम हैं। लेकिन हम सोने के लिए दूर चले गए और शीघ्र ही इसके विषय में भूल गए, और इस कारण से हम इससे अनजान थे। जब हमने अर्हतत्व प्राप्त किया, हमें ऐसा लगा कि अपने क्लेषों को समाप्त करना ही परम बोधि ज्ञान नहीं है; फिर भी हमारे मन की गहराई में बोधिज्ञान--सम्यक् सम्बुद्धत्व-- की प्राप्ति की हमारी आकांक्षा छिपती रहती। किसी तरह, हमें अहसास हुआ कि हम में कुछ कमी है। अभी-अभी, बुद्ध ने हमें जगाया है। अब हम जानते हैं कि हम वास्तव में बोधिसत्व हैं जिनके पास अंततः बोधिसत्व की साधना करके संसार के लोगों के लिए अपना सर्वोत्तम करने की संभावना है। अब हम बहुत खुशी से भर गए हैं।

यह अध्याय अज्ञातकौंडिन्य के साथ समाप्त होता है और अन्य

मानव प्राणी को स्व के सार का ज्ञान नहीं है

बुद्ध स्वभाव में बुद्ध बनने की क्षमता और बुद्ध का सार दोनों सम्मिलित है। पूर्ववर्ती इंगित करता है कि हर कोई अपने प्रयास से किसी दिन बुद्धत्व प्राप्त कर सकता है। इस अर्थ में, हम बुद्ध मार्ग के अपने अभ्यास के संबंध में बुद्ध स्वभाव देखते हैं। उत्तरवर्ती का अर्थ है कि प्रत्येक मनुष्य का सार किसी बुद्ध से अलग नहीं है: यह अपनी वास्तविकता है।

यद्यपि, इस अर्थ में हम सभी बुद्ध स्वभाव से अभिहित हैं फिर भी इसे साकार करने में कठिनाई होती है। इसका कारण यह है कि हम दृढ़ता से मानते हैं कि हमारा शरीर तथा मन भोजन और कपड़ों के बाद इच्छाओं का बुरी तरह पीछा करने वाला और कोई नहीं हमारा स्व है। दृष्टांत का गरीब आदमी हम आम लोगों की तस्वीर है। उसका धनी मित्र, शाश्वत बुद्ध की तरह है, जिनका बुद्ध स्वभाव प्रत्येक जीवित प्राणी पर न्यौछावर है, उसे एक अमूल्य रत्न दिया है, लेकिन उसे जिसका एहसास नहीं है कि उसके पास वह है। हम, उसकी तरह, केवल अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रयास करते हैं और उसमें बुरी तरह खो जाते हैं, जैसे हम अपने को जीवन की जटिलताओं से मुक्त होने का मौका दिए बिना आगे बढ़ते चले जाते हैं।

शाक्यमुनि की देशना हमारी जागरूकता बढ़ाती है

इस लोक में शाक्यमुनि के रूप में बुद्ध अवतरित हुए और हमें बताया कि सभी मानव प्राणी में समान रूप से बुद्ध स्वभाव है-जो गरीब आदमी के दृष्टान्त में उसके वस्त्र के अस्तर में छिपा अमूल्य रत्न है। यह शिक्षा हमारी जागरूकता को बढ़ाती है। तत्क्षण हम इस जागरूकता को प्राप्त करते हैं, हमारे मन का विस्तार होता है, हमारा मन उज्ज्वल होता है, और मुक्त हो जाता है, और हम अपने भविष्य के जीवन में बहुत विश्वास प्राप्त करते हैं।

हम पूर्व से ही मुक्त हैं

सारांश में, दृष्टांत हमें सिखाता है कि, वास्तव में, हम पूर्व से ही मुक्त हैं। प्रत्येक व्यक्ति का सार स्वतंत्र और अप्रतिबंधित जीवन है-बुद्ध स्वभाव, जो कि शाश्वत मूल बुद्ध के साथ एक है। क्योंकि हम यह नहीं जानते हैं, हम जीवन के संघर्ष में फंस गए हैं। लेकिन मुक्त होना मुश्किल नहीं है। हमें केवल इस तथ्य को जागृत करने की आवश्यकता है कि हमारा सार बुद्ध स्वभाव है, जिसका अर्थ है कि हम पूर्व से ही मुक्त हैं।

होक्के सानबू क्यो: काकू होन नो आरामाशी तो योतेन,
(कोसेइप्रकाशन 1991, [संशोधित संस्करण, 2016], पीपी. 86 - 93)

Director's Column

अध्ययन और अभ्यास दोनों का महत्व

इस महीने के अपने संदेश में, प्रेसिडेण्ट निचिको निवानो ने हमें धर्म के अध्ययन और अभ्यास के बारे में शिक्षा दी है।

उन्होंने हमें बार-बार बुद्ध की देशनाओं के अध्ययन के महत्व के विषय में बताया है। इस महीने, उन्होंने हमें प्राकृतिक लोक के भीतर और हमारे आस-पास होने वाली सभी तरह की घटनाओं में सत्य को पहचाने और बुद्ध की आवाज सुनने के महत्व का याद दिलाया है। इसका कारण यह है कि सभी घटनाएँ उस धर्म का प्रतिनिधित्व करती हैं जिसके विषय बुद्ध ने अनंत विविध उपायकौशल्यों के माध्यम से उपदेश किया है।

प्रेसिडेण्ट निवानो ने हमें अपने दैनिक जीवन में बुद्ध की देशनाओं को अमल में लाने का महत्व भी दिखाया है, जबकि हम साथ ही साथ उनका बार बार अध्ययन भी करते हैं। ऐसा हो, इसके लिए, हमें अपनी आस्था की तीन व्रतों के अभ्यास की आदत डालनी चाहिए, जैसेकि, "सूत्र का पाठ करना," " "दूसरों को धर्म में मार्गदर्शन करना तथा मार्ग में साथी सदस्यों की सहायता करना, "होजा बैठक में भाग लेना और "धर्म का अध्ययन और अभ्यास करना।"

स्वयं की और दूसरों दोनों की मुक्ति के लिए मैं आशा करता हूँ कि हम विशेष रूप से बोधिसत्व के अभ्यास (दूसरों के बीच धर्म का प्रचार प्रसार करना और मार्ग में अपने साथी सदस्यों की सहायता करना) का और अधिक परिश्रम के साथ प्रयास करेंगे।

रेव. कोइची साइतो
निदेशक, रिश्शो कोसेइ काइ इन्टरनेशनल

We welcome comments on our newsletter Living the Lotus: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai: A Global Buddhist Movememt

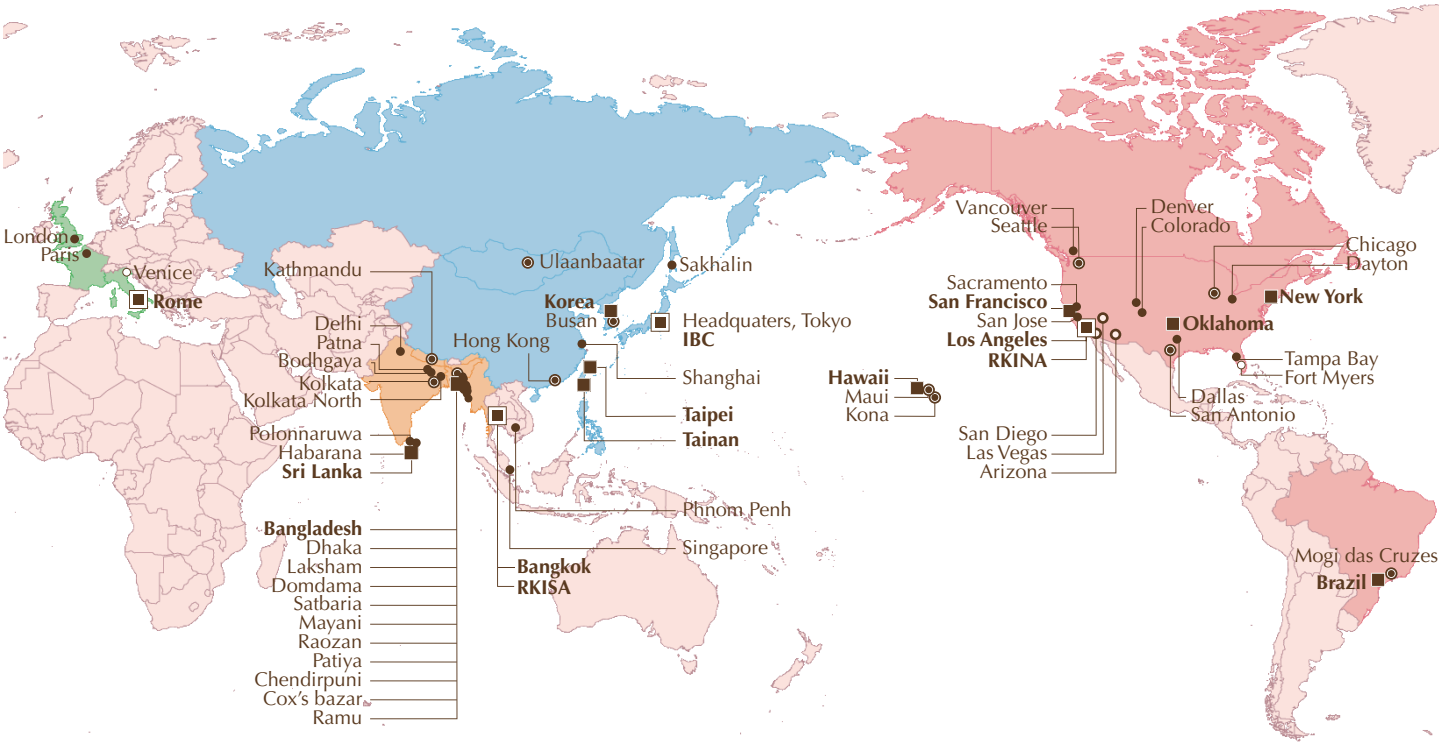

Rissho Kosei-kai International
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1124 *Fax:* 81-3-5341-1224
e-mail: living.the.lotus.rk-international@kosei-kai.or.jp

Rissho Kosei-kai International of North America (RKINA)
2707 East First Street, Suite #1, Los Angeles, CA 90033, U.S.A
Tel: 1-323-262-4430 *Fax:* 1-323-262-4437
e-mail: info@rkina.org http://www.rkina.org

Branch under RKINA

Rissho Kosei-kai of Seattle's Buddhist Learning Center
28621 Pacific Highway South, Federal Way, WA 98003 U.S.A.
Tel: 1-253-945-0024 *Fax:* 1-253-945-0261
e-mail: rkseattlewashington@gmail.com
http://buddhistlearningcenter.org/

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Antonio
6083 Babcock Road, San Antonio, TX 78240, U.S.A.
P.O. Box 692148, San Antonio, TX78269, U.S.A
Tel: 1-210-561-7991 *Fax:* 1-210-696-7745
e-mail: dharmasanantonio@gmail.com
http://www.rkina.org/sanantonio.html

Rissho Kosei-kai of Tampa Bay
2470 Nursery Road, Clearwater, FL 33764, U.S.A.
Tel: (727) 560-2927 *e-mail:* rktampabay@yahoo.com
http://www.buddhismtampabay.org/

Rissho Kosei-kai of Vancouver

Rissho Kosei-kai Buddhist Church of Hawaii
2280 Auhuhu Street, Pearl City, HI 96782, U.S.A.
Tel: 1-808-455-3212 *Fax:* 1-808-455-4633
e-mail: info@rkhawaii.org http://www.rkhawaii.org

Rissho Kosei-kai Maui Dharma Center
1817 Nani Street, Wailuku, HI 96793, U.S.A.
Tel: 1-808-242-6175 *Fax:* 1-808-244-4625

Rissho Kosei-kai Kona Dharma Center
73-4592 Mamalahoa Highway, Kailua-Kona, HI 96740 U.S.A.
Tel: 1-808-325-0015 *Fax:* 1-808-333-5537

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Los Angeles
2707 East First Street, Los Angeles, CA 90033, U.S.A.
Tel: 1-323-269-4741 *Fax:* 1-323-269-4567
e-mail: rk-la@sbcglobal.net http://www.rkina.org/losangeles.html

Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Arizona
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Colorado
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of San Diego
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Las Vegas
Rissho Kosei-kai Buddhist Center of Dallas

Rissho Kosei-kai of San Francisco
1031 Valencia Way, Pacifica, CA 94044, U.S.A.
Tel: 1-650-359-6951 *Fax:* 1-650-359-6437
e-mail: info@rksf.org http://www.rksf.org

Rissho Kosei-kai of Sacramento
Rissho Kosei-kai of San Jose

Rissho Kosei-kai of New York
320 East 39th Street, New York, NY 10016 U.S.A.
Tel: 1-212-867-5677 *Fax:* 1-212-697-6499
e-mail: rkny39@gmail.com http://rk-ny.org/

Rissho Kosei-kai of Chicago
1 West Euclid Ave., Mt. Prospect, IL 60056 U.S.A.
Tel : 1-773-842-5654 *e-mail:* murakami4838@aol.com
http://rkchi.org/

Rissho Kosei-kai of Fort Myers
http://www.rkftmyersbuddhism.org/

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Oklahoma
2745 N.W. 40th Street, Oklahoma City, OK 73112 U.S.A.
Tel: 1-405-943-5030 *Fax:* 1-405-943-5303
e-mail: rkokdc@gmail.com http://www.rkok-dharmacenter.org

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Denver
1255 Galapago Street, #809 Denver, CO 80204 U.S.A.
Tel: 1-303-446-0792

Rissho Kosei-kai Dharma Center of Dayton
425 Patterson Road, Dayton, OH 45419 U.S.A.
http://www.rkina-dayton.com/

Risho Kossei-kai do Brasil
Rua Dr. José Estefno 40, Vila Mariana, São Paulo-SP,
CEP 04116-060 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377 *Fax:* 55-11-5549-4304
e-mail: risho@terra.com.br http://www.rkk.org.br

Risho Kossei-kai de Mogi das Cruzes
Av. Ipiranga 1575-Ap 1, Mogi das Cruzes-SP,
CEP 08730-000 Brasil
Tel: 55-11-5549-4446 / 55-11-5573-8377

Rissho Kosei-kai of Taipei
4F, No. 10 Hengyang Road, Jhongjheng District,
Taipei City 100, Taiwan
Tel: 886-2-2381-1632 *Fax:* 886-2-2331-3433
http://kosei-kai.blogspot.com/

Rissho Kosei-kai of Tainan
No. 45, Chongming 23rd Street, East District,
Tainan City 701, Taiwan
Tel: 886-6-289-1478 *Fax:* 886-6-289-1488

Korean Rissho Kosei-kai
6-3, 8 gil Hannamdaero Yongsan gu, Seoul, 04420,
Republic of Korea
Tel: 82-2-796-5571 *Fax:* 82-2-796-1696
e-mail: krkk1125@hotmail.com

Korean Rissho Kosei-kai of Busan
3F, 174 Suyoung ro, Nam gu, Busan, 48460, Republic of Korea
Tel: 82-51-643-5571 *Fax:* 82-51-643-5572

International Buddhist Congregation (IBC)
Fumon Media Center 3F, 2-7-1 Wada, Suginami-ku, Tokyo, Japan
Tel: 81-3-5341-1230 *Fax:* 81-3-5341-1224
e-mail: ibcrk@kosei-kai.or.jp http://www.ibc-rk.org/

Branches under the Headquarters

Rissho Kosei-kai of Hong Kong
Flat D, 5/F, Kiu Hing Mansion, 14 King's Road,
North Point, Hong Kong, Republic of China

Rissho Kosei-kai of Ulaanbaatar
15F Express tower, Peace avenue, khoroo-1, Chingeltei district,
Ulaanbaatar 15160, Mongolia
Tel: 976-70006960 *e-mail:* rkkmongolia@yahoo.co.jp

Rissho Kosei-kai of Sakhalin
4 Gruzinski Alley, Yuzhno-Sakhalinsk
693005, Russian Federation
Tel & Fax: 7-4242-77-05-14

Rissho Kosei-kai Friends in Shanghai

Rissho Kosei-kai of South Asia Division
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218

Rissho Kosei-kai International of South Asia (RKISA)
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218
e-mail: thairissho@csloxinfo.com

Branches under the South Asia Division

Rissho Kosei-kai of Delhi
77 Basement D.D.A. Site No. 1, New Rajinder Nagar,
New Delhi 110060, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata
E-243 B. P. Township, P. O. Panchasayar, Kolkata 700094,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Kolkata North
AE/D/12 Arjunpur East, Teghoria, Kolkata 700059,
West Bengal, India

Rissho Kosei-kai of Bodhgaya
Ambedkar Nagar, West Police Line Road
Rumpur, Gaya-823001, Bihar, India

Rissho Kosei-kai of Kathmandu
Ward No. 3, Jhamsilhel, Sancepa-1, Lalitpur, Kathmandu,

Nepal

Rissho Kosei-kai of Phnom Penh
#201E2, St 128, Sangkat Mittapheap, Khan 7 Makara,
Phnom Penh, Cambodia

Rissho Kosei-kai of Patna
Rissho Kosei-kai of Singapore

Thai Rissho Friendship Foundation
201 Soi 15/1, Praram 9 Road, Bangkapi, Huaykhwang
Bangkok 10310, Thailand
Tel: 66-2-716-8141 *Fax:* 66-2-716-8218
e-mail: info.thairissho@gmail.com

Rissho Kosei-kai of Bangladesh
85/A Chanmari Road, Lalkhan Bazar, Chittagong, Bangladesh
Tel & Fax: 880-31-626575

Rissho Kosei-kai of Dhaka
House#408/8, Road#7(West), D.O.H.S Baridhara,
Dhaka Cant.-1206, Bangladesh
Tel & Fax: 880-2-8413855

Rissho Kosei-kai of Mayani
Mayani(Barua Para), Post Office: Abutorab, Police Station:
Mirshari, District: Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Patiya
Patiya, sadar, Patiya, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Domdama
Domdama, Mirsarai, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Cox's Bazar
Ume Burmese Market, Main Road Teck Para, Cox'sbazar,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Satbaria
Satbaria, Hajirpara, Chandanish, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Laksham
Dupchar (West Para), Bhora Jatgat pur, Laksham, Comilla,
Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Raozan
West Raozan, Ramjan Ali Hat, Raozan, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Chendirpuni
Chendirpuni, Adhunagor, Lohagara, Chittagong, Bangladesh

Rissho Kosei-kai of Ramu

Rissho Kosei Dhamma Foundation, Sri Lanka
No. 628-A, Station Road, Hunupitiya, Wattala, Sri Lanka
Tel: 94-11-2982406 *Fax:* 94-11-2982405

Rissho Kosei-kai of Habarana
151, Damulla Road, Habarana, Sri Lanka

Rissho Kosei-kai of Polonnaruwa

Branches under the Headquarters

Rissho Kosei-kai di Roma
Via Torino, 29-00184 Roma, Italia
Tel & Fax: 39-06-48913949 *e-mail:* roma@rk-euro.org

Rissho Kosei-kai of the UK
Rissho Kosei-kai of Venezia
Rissho Kosei-kai of Paris